ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 193-194**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

गोण्डा जनपद उत्तर प्रदेश में वन संसाधन के वितरण में विद्यमान क्षेत्रीय विषमताएं : एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ0 कमलेश कुमार

असिस्टेन्ट प्रोफेसर– भूगोल विभाग, आचार्य नरेन्द्रदेव किसान पी0जी0 कॉलेज, बभनान, गोण्डा (उ0प्र0) भारत

Received-08.07.2026, Revised-16.07.2026, Accepted-23.08.2026, **E-mail:kamleshkumarupadhyay71@gmail.com**

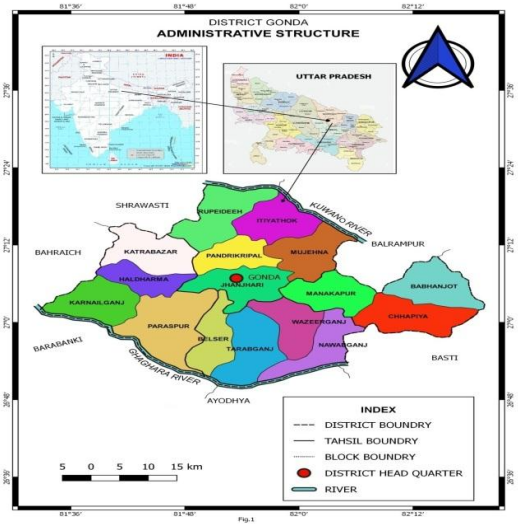
सारांशः वन संसाधन किसी भी क्षेत्र के पारिस्थितिक संतुलन तथा सतत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रकृति ने मानव को अनेक संसाधन दिये हैं। प्रकृति प्रदत्त इन संसाधनों में वनों का विशेष महत्व है, क्योंकि मानव समाज अपनी विविध आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इसका उपयोग प्राचीनकाल से करता आ रहा हैं। वन एक महत्वपूर्ण संसाधन होने के साथ–साथ वातावरण की प्रत्यक्ष सूचक होती है। यह मानव के लिए प्रकृति का अनुपम उपहार है। किसी देश की अर्थव्यवस्था पर भी वहाँ की प्राकृतिक वनस्पति का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। राष्ट्रीय वन नीति 1988 के अनुसार पारिस्थितिक संतुलन बनाये रखने के लिए कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 33 प्रतिशत भाग पर वनों का विस्तार होना अत्यन्त आवश्यक है, परन्तु गंगा के मैदानी एवं तराई भागों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि, कृषित क्षेत्र का विस्तार तथा नगरीकरण के कारण वनों के क्षेत्र में तीव्र कमी आयी है। अध्ययन क्षेत्र के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल (4003 वर्ग किमी0) के मात्र 3 प्रतिशत भाग पर ही वनों का विस्तार पाया गया है। यह सीमित वन संसाधनों के क्षेत्रीय वितरण में भी बड़ी असमानता देखी गयी है। कभी यह जनपद वनों से आच्छादित था। अनेक ऋषियों मुनियों की तपस्थली रहा है। इसे गोनार्ड अर्थात गौचारण क्षेत्र के नाम से जानते थे।

कुंजीभूत शब्द– वन संसाधन, क्षेत्रीय विषमताएं, पारिस्थितिक संतुलन, सतत विकास, प्रकृति प्रदत्त,मानव समाज, अनुपम उपहार, गोनार्ड।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय– प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र (गोण्डा जनपद) देवीपाटन मण्डल का एक महत्वपूर्ण जनपद है। इसका अक्षांशीय विस्तार 26041′ से 27051′ उत्तरी अक्षांश तथा 81030′ पूर्वी देशान्तर से 82046′ पूर्वी देशान्तर के मध्य जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4003 वर्ग किलोमीटर है जो मण्डल के कुल क्षेत्रफल का 28.13 प्रतिशत है। इसके उत्तर में बलरामपुर दक्षिण में अयोध्या, बाराबंकी पूरब में बस्ती तथा पश्चिम में बहराइच जनपद की सीमाएं मिलती हैं। इसकी दक्षिण सीमा का निर्धारण सरयू नदी(घाघरा नदी) द्वारा होता है। यहाँ की जलवायु मानसूनी तथा मिट्टी उपजाऊ जलोढ़ है। अध्ययन क्षेत्र में सघन जनसंख्या बसाव पाया जाता है। कृषि यहाँ की अर्थव्यवस्था का मूल आधार है।

उद्देश्य–प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैः

1. अध्ययन क्षेत्र में वन संसाधनों का विकास खण्डवार वितरण का अध्ययन करना।
2. जनपद के विभिन्न भागों में वनों के वितरण में विद्यमान विषमता की पहचान करना।
3. अध्ययन क्षेत्र में वन आवरण में हो रही कमी तथा विषमता के लिए उत्तरदायी प्राकृतिक तथा मानवीय कारकों का विश्लेषण करना।



शोध प्रविधि– प्रस्तुत शोध पत्र मूलतः द्वितीयक आकड़ों पर आधारित है। अध्ययन को उपयोगी बनाने के लिए सांख्यिकीय विधियों जैसे समान्तर माध्य, मानक विचलन तथा विभिन्नता गुणांक की गणना की गयी है। आकड़ों का संग्रहण जिला सांख्यिकी पत्रिका से किया गया है। इसमें वर्ष 2014 एवं 2024 के आकड़ों को सम्मिलित करके तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

वन संसाधन का स्थानिक वितरण– गोण्डा जनपद में वन संसाधन को क्षेत्रीय वितरण की दृष्टि से चार वर्गों में विभक्त किया गया है जिसे सारिणी एक तथा मानचित्र दो में दर्शाया गया है। सारिणी से स्पष्ट है कि जनपद के नौ विकास खण्डों पण्डरीकृपाल, झंझरी, कटरा बाजार, हलधरमऊ, करनैलगंज, परसपुर, वेलसर, तरबगंज तथा वजीरगंज में वर्ष 2013–14 में सारिणी–1 गोण्डा जनपद में वन क्षेत्र का वितरण (प्रतिशत मे) वनों का विस्तार कुल प्रतिवेदित क्षेत्र के एक प्रतिशत से भी कम भूमि पर पाया गया था, इन्हें अति निम्न वर्ग में रखा गया। इस वर्ग में वर्ष 2023–24 में विकास खण्डों की संख्या घटकर छः हो गयी। इसमें झंझरी, कटरा बाजार, हलधरमऊ, परसपुर, बेलसर और वजीरगंज सम्मिलित हैं। वन वितरण के निम्नवर्ग में वर्ष 2013–14 में रूपईडीह विकास खण्ड था जहाँ एक से दो प्रतिशत के मध्य वन क्षेत्र पाया गया, जबकि वर्ष 2023–24 में इस वर्ग में तीन विकास खण्ड रूपईडीह, इटियाथोक और छपिया आकलित किये गये। मध्यम वर्ग में उन विकास खण्डों को रखा गया जहाँ वनों का विस्तार दो से तीन प्रतिशत क्षेत्र पर फैला हुआ है। इसमें वर्ष 2013–14 में इटियाथोक, मुजेहना और छपिया पाया गया जबकि वर्ष 2023–24 में मुजेहना, तरबगंज और बभनजोत सम्मिलित है।

सारिणी–1 गोण्डा जनपद में वन क्षेत्र का वितरण (प्रतिशत में)

वर्ग	2013–14			2023–24		
वर्ग	आन्तरिक मूल्य	वि.ख. संख्या	कुल वि.ख. का प्रतिशत	आन्तरिक मूल्य	वि.ख. संख्या	कुल वि.ख. का प्रतिशत
अति निम्न	1–कम	9	56.25	1–कम	6	37.50
निम्न	1–2	1	6.25	1–2	3	18.75
मध्यम	2–3	3	18.75	2–3	3	18.75

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

उच्च	3–अधिक	3	18.75	3–अधिक	4	25.00
योग–		**16**	**100**		**16**	**100**

S.V. -2014 Mean= 2.73 S.D.= 4.70 C.V.= 172.16%
S.V. -2024 Mean= 2.89 S.D.= 3.53 C.V.= 121.94%

Source:- District Statistical Bulletin-2014&2024

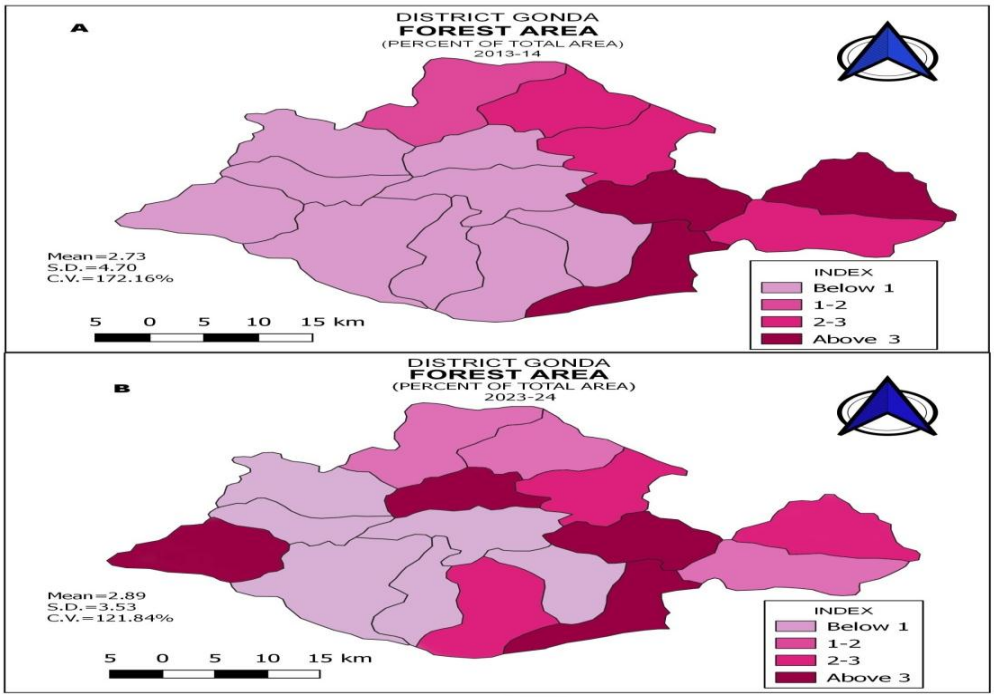


Fig.2

अध्ययन क्षेत्र के वे विकास खण्ड जहाँ पर वन क्षेत्र तीन प्रतिशत से अधिक भाग पर पाये गये उन्हें उच्च वर्ग में रखा गया। इस वर्ग में जनपद के नबाबगंज, मनकापुर और बभनजोत विकास खण्ड वर्ष 2013–14 में तथा पण्डरीकृपाल, करनैलगंज, नबाबगंज तथा मनकापुर वर्ष 2023–24 में पाये गये। टिकरी रिजर्वफारेस्ट यहाँ का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध प्राकृतिक वन क्षेत्र है जो जनपद के पूर्वी भाग में स्थित है। वर्ष 2013–14 में जनपद में इसका औसत क्षेत्र 2.73 प्रतिशत था जो बढ़कर वर्ष 2023–24 में 2.89 प्रतिशत हो गया। विभिन्नता गुणांक 172.16 प्रतिशत से घटकर 121.94 प्रतिशत हो गयी। यह जनपद में वनों के वितरण में विद्यमान उच्च क्षेत्रीय विषमता को दर्शाती है। क्षेत्रीय विषमता का मुख्य कारण पश्चिमी ओर मध्यवर्ती भाग में कृषि का अत्यधिक विस्तार, दक्षिणी भागों में घाघरा तथा सरयू नदी के कछारी भाग में बाढ़ के कारण स्थायी वनस्पति का विकास न हो पाना। वन नीति तथा अवैध कटायी है।

निष्कर्ष– वन क्षेत्र में वन संसाधनों की स्थानिक विषमता पर्यावरण संतुलन के लिए एक गम्भीर चुनौती है। पश्चिमी विकास खण्डों में वन आवरण की भारी कमी के कारण भू–जल स्तर में गिरावट और स्थानीय तापमान में वृद्धि जैसी समानताएं देखी जा सकती है। इन समस्याओं से निजात के लिए पश्चिमी भागों में कृषक अपने खेतों के मेड़ों पर तथा खाली जमीन में पापलर, सागौन के वृक्ष लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाय। वन विहीन विकास खण्ड जैसे हलधरमऊ में ग्राम समाज की बंजर भूमि पर छोटे ओर सघन 'शहरी वन' विकसित किये जायें। टिकरी वन तथा पार्वती अरगा को जोड़कर 'इकोटूरिज्म सर्किट' के रूप में विकसित किया जाय जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार तथा वनों के संरक्षण के प्रति जागरूक हों।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, विनय कुमार (2025): गोण्डा जनपद में भूमि उपयोग का भौगोलिक अध्ययन, इजूकेशनल वेब ए मंथली इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लनरी रिसर्च (E.W.M.I.J.M.R.) अंक 14 नं. 12 जून पृष्ठ 18–22.
2. कुमार, आर. एवं सिंह, एस. (2014): गोण्डा जनपद (उ0प्र0) में पार्वती, अरगा, रामसर आर्द्र भूमि और उसके आस–पास के क्षेत्रों की भूमि उपयोग गतिशीलता,रिसर्चगेट रिपॉजिटरी।
3. सिंह, ए. एवं मिश्रा, पी.(2007): गोण्डा जनपद (उ0प्र0) के टिकरी आरक्षित वन क्षेत्र के लोक औषधीय पौधे, जर्नल ऑफ इकोनॉमिक एण्ड टैक्सोनॉमिक वॉटनी, 31(2).
4. भारतीय वन सर्वेक्षण (FSI): भारत वन स्थिति रिपोर्ट, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार।

*****